आर.एन.आई.नं. RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी. सं. RJ/UD/29-128/2015-2017

मन के जीते जीत सदा

अंक-226 | तारीख- 22 जुलाई, 2015, द्वितीय आषाढ़ शुक्ल- 06 बुधवार | उदयपुर | कुल पृष्ठ-2 | मुल्य -1 रूपया

गायत्री मंत्र का जप कितना किया जाए

स्मृति–ग्रंथों में कितना जप किया जाए, इसका विधान मिलता है। शंख स्मृति (12/14–15) में कहा गया है गायत्री–मंत्र के जप से भय नहीं होता। सौ बार जप करने से वह दिन में किए गए पापों को समूल नष्ट कर देती है तथा एक हजार जप करने से साधक का पापों से पूर्णतया उद्धार हो जाता है। गायत्री मंत्र द्वारा प्रदत्त आहुतियां सर्वकाम–प्रदायिनी बन जाती है। महाभारत में भी गायत्री का महात्म्य बताया गया है तथा इसके द्वारा 'ब्रह्म–दर्शन' संभव बताया है। रामायण में विश्वामित्र ने राम–लक्ष्मण को इस मंत्र का रहस्य समझाया था।

केरोसिन पर सिर्फ 12 रु. की सब्सिडी देगी सरकार

केंद्र सरकार ने केरोसिन पर दी जाने वाली सब्सिडी की सीमा 12 रू. प्रतिलीटर तय की है, लेकिन इसके दाम में बढ़ोतरी नहीं की जाएगी। खुदरा दामों को स्थिर रखने के लिए सरकार ने ओएनजीसी जैसी प्रमुख तेल कंपनियों से 5000–6000 करोड़ रूपए के बीच भुगतान करने को कहा है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के जरिये केरोसिन 14.96 रूपए प्रतिलिटर के दाम पर बेची जा रही है। जबकि उसकी असल कीमत 33.47 रूपए है। इस तरह के तेल कंपनियों को 18.51 रूपए प्रतिलीटर का घाटा हो रहा है। एक वरिष्ठ अधिकरी ने कहा है कि इस नुकसान से बाहर निकलने का फॉर्मूला खोज लिया गया है। जिसे मंत्रालय बजट से राज्य के तेल विक्रेताओं को 12 रूपए प्रति लीटर नगद देगा जबकि खुदरा बिक्री मूल्य व उत्पादन की लागत के बीच का अंतर ओएनजीसी वहन करेगी।

25 विकलांगो को लगेंगे कृत्रिम अंग

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की बैंगलुरू शाखा द्वारा यशवन्तपुर में स्कूली बच्चों को पाठ्य सामग्री स्कूल पोशाक एवं पौष्टिक आहार तथा गोरीपाल्या में गरीब परिवारों में वस्त्र व राशन वितरण किया गया। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि इसी तरह अलीगढ़ में लगाए गए निःशक्त सहायता कृत्रिम अंग लगाने के लिए शिविर में 25 एवं ऑपरेशन हेतु 10 विकलांगों का चयन किया गया।

गन्ने के रस से बनेगा इथेनॉल

देश में स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने तथा आयातित ईंधन पर निर्भरता कम करने के साथ ही किसानों को फसलों का उचित मूल्य दिलाने के लक्ष्य के साथ सरकार गन्ने के रस से सीधे इथेनॉल बनाने और दूसरी फसलों के अवशिष्ट से जैव ईधन बनाने की महत्वकांक्षी योजना बना रही है। तेल एवं प्राकृतिक गैस मंत्री धमेन्द्र प्रधान ने यहां 'भारत में जैव ईधन कार्यक्रमः उन्नति की ओर' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में कहा कि इथेनॉल सिर्फ गन्ना के सह उत्पाद के रूप में प्रचलित है, लेकिन अब गन्ने के रस से सीधे इथेनॉल बनाने पर काम किया जा रहा है।

अपनत्व की भावना के बिना पूजा या आराधना करना निरर्थक है। ऐसी पूजा केवल भय और दूरी पैदा होती है। दूसरी तरफ, कुछ और लोग पूजा को निंदनीय समझते हैं। दूसरों को पूजा करते हुए देखकर वे चिढ़ जाते हैं।

विश्व के विभिन्न भागों में पूजा व आराधना के ढंग भिन्न हैं। कुछ लोग 'पोप' की पूजा करते हैं, दूसरे 'पोप स्टार्स' की, और कुछ लोग राजनैतिक नेताओं के दीवाने हैं। बच्चों को देखिए, वे सारी दीवारों पर अपने 'हीरो' के पोस्टर लगाकर पूजा करते हैं।

आराधना का भाव ही तुम्हें प्रशंसक बनाता है। जिन्हें तुम पसन्द करते हो, उनके साथ आत्मीयता का भाव रखने से, और उनमें दिव्यता को देखने से तुम सन्त बनते हो। जो अपनेपन की भावना के बिना पूजा करते हैं और जो पूजा के विरुद्ध है, दोनों की एक ही दशा है – दोनों भय–ग्रस्त हैं।

बाइबल में कहा है, "मैं तुम्हारा भगवान हूँ। मेरे सामने तुम्हारा और कोई भगवान नहीं है।" यही भारतीय प्रचीन शास्त्रों में कहा गया है – "मैं हूँ" चेतना से परे जो ईश्वर की पूजा करता है, वह मूढ़ है। 'पूजो और न देव' – दूसरे देवों को न पूजो।

अर्पण, अर्पित, अर्पणकर्ता – सभी एक हैं।

पिता ही धर्म, स्वर्ग व सबसे बड़ा तप है

पिता भरण–पोषण और अध्यापन करने के कारण पुत्र का प्रधान गुरु है। वह जो कुछ भी आज्ञा दे, उसे धर्म समझकर स्वीकार करना चाहिए। यही वेद की भी निश्चित आज्ञा है। पुत्र पिता के स्नेह का पात्र है। किंतु पिता पुत्र का सर्वस्व है। एक मात्र पिता ही पुत्र को शरीर आदि सब कुछ देता है, इसलिए कोई सोच–विचार किये बिना ही पिता की आज्ञा मानता है, उसके समस्त पातक नष्ट हो जाते हैं। गर्भाधान और सीमन्तोन्नयन संस्कार के द्वारा पिता ही पुत्र को उत्पन्न करता है। वही अन्न–वस्त्र देता, पढ़ाता–लिखाता और समस्त लोक व्यवहारों का ज्ञान कराता है। पिता ही धर्म है, पिता ही स्वर्ग है और पिता ही सबसे बड़ा तप है। पिता के प्रसन्न होने पर सम्पूर्ण देवता प्रसन्न हो जाते है। पिता जो कुछ भी कहता है, वह पुत्र का अभिनन्दन करे तो वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। वृक्ष अपने फूल और फलों को छोड़ देते हैं किंतु पिता बड़े से बड़े संकट में भी स्नेह के कारण पुत्र को नहीं छोड़ता। अतः पुत्र के लिए पिता का स्थान बहुत ऊँचा है। (महाभारत) महान भारतीय संस्कृति मातृ–पिता सेवा प्रेरक रही है, जिसको अनेक संत महात्माओ ने चरितार्थ किया है।

मातृ–पितृ भक्त श्रवण कुमार के अलावा भगवान महावीर, मुनि परशुरामजी व नारदजी, भक्त प्रहलाद, पुंडलीक, नचीकेता, अष्टावक्र तथा शनिदेव आदि अनेक मनिषियों ने मातृ–पितृ सेवातीर्थ को सार्थक व साकार किया है।

वैरागी नचिकेता का पिता प्रेम

नचिकेता यमराज ऋषि के पास गए। वे घर पर नहीं थे। तीन दिन भूखे–प्यासे नचिकेता प्रतीक्षा करता रहा। यमराज को यह जान कर दुःख हुआ कि एक अतिथि भूखा–प्यासा उसके घर उसकी प्रतीक्षा करता रहा। उसने नचिकेता से तीन वर मांगने को कहा। तब नचिकेता ने जो दो वर मांगे उसमें पहला वर पिताश्री की प्रसन्नता मांगा तथा दूसरा वर स्वर्गदायिनी अग्नि विद्या जो यमराज ने सहर्ष दे दिए।

इस प्रक्रिया में वस्तु को किस मंत्र का उच्चारण कर देना चाहिये, यह मुख्य बात है।

यथासम्भव इसकी जानकारी होनी आवश्यक है। यद्यपि दान करने की वस्तुएँ अनेकानेक हैं और मंत्र भी विविध है, तथापि दान संबंधी कुछ मुख्य वस्तुओं के मंत्र यहाँ पर दिये जा रहे है।

अन्नदान :-

दानों में अन्नदान की विशेष महिमा है। अन्न से जीवन यात्रा का निर्वाह होता है। अन्न में ही सब कुछ प्रतिष्ठित है। अन्न ही शरीर के बल को बढ़ाने वाला है और अन्न के आधार पर ही प्राण टिके हुए है। अतः अन्न का दान अवश्य करना चाहिये। इसमें देश, काल–पात्र का भी विचार नहीं है। अन्नदान करने वाला पुरूष प्राणदाता और सर्वस्व देने वाला कहलाता है–'अन्नदः प्राण दो लोके सर्वदः प्रोच्यते तु सः।।'

इस प्रकार की अन्नत महिमा वाले अन्नदाता को करते समय अर्थात अन्न देते समय (आमान्न–कच्चा अन्न अथवा सिद्धांत–पकवान), भोजन कराते समय निम्न मंत्र बोलना चाहिए–

अन्नमेंव यतो लक्ष्मीरन्नमेव जनार्दनः।
अन्नं ब्रह्माखिलत्राणमस्तु मे सर्वजन्मनि।।

अर्थात् अन्न ही लक्ष्मी है। अन्न ही जर्नादन विष्णु है और अन्न ही ब्रह्मा है। अतः इस अन्न के दान से ये तीनों सभी जन्मों से मेरी रक्षा करें।

गुड़दान :-

जिस प्रकार सभी मंत्रों में प्रणव (ओंकार), सभी नारियों में देवी पार्वती श्रेष्ठ है, उसी प्रकार सभी रसों में इक्षुरस (गन्ने का रस) सर्वश्रेष्ठ हैं। अतः गुड़दान से मुझे परम शांति प्राप्त हो। गुड़दान सर्वदा करना चाहियै –

प्रणवः सर्वमन्त्राणां नारीणां पार्वती यथा।
तथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षुरसो मतः।।
मम तस्मात्परां शांति ददस्व गुड सर्वदा।

फलदान :-

फल मन को प्रसन्न करने वाले, सुन्दर तथा नित्य स्वाद को बढ़ाने वाले है, ऐसे फलों के दान से मेरी सन्तान परम्परा विशुद्ध संस्कार सम्पन्न हो। फल मधुर तथा मुनि और देवताओं के प्रिय है, अतः उनके दान से मेरे सभी मनोरथ पूर्ण हों।

मनोहराणि रम्याणि नित्यं स्वादुकराणि च।
फलानां सम्प्रदानेन सन्ततिस्त्वमला मम।।
फलानि मधुराणीह मुनिदेवप्रियाणि च।
तम्मात्तेषां प्रदानेन सफला मे मनोरथाः।।

कंबलदान :-

ऊन से बना कंबल शीत तथा वर्षा का हरण करने वाला है, पवित्र है तथा दृष्टि के बल (नेत्रज्योति) को बढ़ाने वाला है। ऐसे कंबल के दान से मुझे सदा शांति प्राप्त हो –

शीतवर्षाहरः पुण्यो दृष्टीबलविवर्धनः।
कम्बलस्य प्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम।।

पुस्तकदान :-

वेदादि शास्त्र, पुराण, धर्मशास्त्र तथा गीता–रामायण आदि पुस्तकों का जो दान करता है, उसके फल के विषय में बताया गया है कि हजार गोदान करने को जो फल होता है। वह फल एक पुस्तक के दान करने से प्राप्त होता है। हे सरस्वती! हे जगन्माता! हे शब्दब्रह्म की अधिदेवता! इस सरस्वती के दान (ग्रन्थदान) से वाणी के अधिष्ठाता देव प्रत्येक जन्म में मुझ पर प्रसन्न रहें –

धेनूदानसहस्त्रेण सम्यग्दानेन यत्फलम्।
तत्फलं समवाप्नोति पुस्तकैकप्रदानतः।।
सरस्वति जगन्मातः शब्दब्रह्माधिदेवते।
अस्याः प्रदानाद्वागीशा प्रसन्ना जन्मनि जन्मनि।।

सिन्दूरदान :-

सिन्दूर अत्यंत शुभकारक, रमणीय तथा गणेशजी को अत्यंत प्रसन्न करने वाला है, इसके दान से मेरा ऐश्वर्य तथा मेरी सन्तान परम्परा अविचल बनी रहे–

सिन्दूरं शोभनं रम्यं गणेशस्यं प्रियं परम्।
दानेनास्य परा लक्ष्मीः स्थिरा मे चास्तु सन्ततिः।।

प्याऊदान :-

फाल्गुनमास के व्यतीत हो जाने पर चैत्रमास में नगर के मध्य में, चौराहे पर, वृक्ष के मूल में अथवा जलरहित स्थान में किसी पुण्य दिन को प्याऊ के लिए सुन्दर मण्डप की स्थापना कर उसके मध्य में सुगंधित शीतल जल से युक्त कुम्भों की स्थापना करें। प्याऊ की स्थापना करते समय निम्न मंत्र बोलना चाहियें–

प्रपेयं सर्वसामान्या भूतेभ्यः प्रतिपादिता।
अस्याः प्रदानात् सफला मम सन्तू मनोरथाः।।

अर्थात् यह प्याऊ सभी प्राणियों के लिये बनायी गयी है। यह सर्वसामान्य के उपयोग के लिये है, इसके दान (उत्सर्ग) से मेरे सभी मनोरथ पूर्ण हों।

अग्निदान :-

हेमंत तथा शीत ऋतु में किसी तीर्थस्थान, देवालय, मठ तथा शीत के स्थान पर तापने के लिए जो आग की व्यवस्था करता है, वह साठ हजार वर्षो तक स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है।

मानव मन के बोल

(आत्मकथा)

जिन खोजा तिन पाईया

देवता का अर्थ अच्छा काम करना होना। क्या अच्छे कार्य है? भूखे को भोजन कराना, प्यासे को पानी पिलाना, बहुत सरल है। पानी का घड़ा भी है, गिलास भी रखा है और सामने वाले को आप कहते हैं ठहर भाई आदमी आता है। कौनसा आदमी आता है? किस आदमी को बुला रहे हो? आपकी आत्मीयता कहाँ चली गई? जाग्रत कीजिए अपने आप को, खुद को इंसान बनाईये और जल–पिला दीजिये। हमें अपनी आत्मा जगानी पड़ेगी। कविता सुनी बहुत अच्छी बात है। हमारे राजेश भाई ने जो युगाण्डा रहता है, एयरटेल युगाण्डा का प्रेसीडेन्ट है उसने लिखा–

सच है कि जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है।
और दुनिया उतनी ही तेजी से सिमट रही है।
पर मुझे तो मेरा, पड़ोसी नहीं मिलता।
भीड़ तो मिलती है, पर इंसान नहीं मिलता।

जगाईये, खोजिये अपने–आप में इंसानियता ढूंढिये अपने–आप में। पड़ोसी को इंसान बनाने से पहले खुद इंसान बनिये। हम सुधरेंगे–युग सुधरेगा। आज से संकल्प लीजिये, प्रतिज्ञा कीजिये अपने आप से। हम सोएँगे नहीं, हम ठगाएँगे नहीं, हम अपनी आत्मा की उन्नति करके जैसे काँच में अपना चेहरा देखते हैं वैसे अपनी धवल आत्मा के दर्शन करेंगे। हम सच्चे इंसान बनेंगे, लड़खड़ाते को उठाएँगे। यदि उलझन जीवन में आ गई..... अभी परसों ही पढ़ रहा था।

क्रमश अगले अंक में.....

सम्पादकीय

एक महात्मा जी थे–बड़े भले–बड़े अच्छे। नाम के ही साधु नहीं, हृदय से भी भक्त थे। आमतौर पर उनके श्री मुख से निकलता था –"जगदीश जगत का भला ही करता हैं।" एक दिन एक मैय्या दुःखी अवस्था में तो आयी ही– उन्हें महात्मा जी पर गुस्सा भी था। शोक पूर्ण अवस्था में वह बोली–"महाराज आपकी सब बातें तो मैं मान सकती हूँ–पर बताइए, मेरी बहन के इकलौते तीस वर्षीय बच्चे को भगवान ने उठा लिया, क्या भला किया है – इसने ? महाराज श्री विचार मग्न हुए, बोले," मांई, मैं तुम्हारी बहन का दुःख समझता हूँ। ज्ञान से यों समझो कि किसी बड़े सेठ की पच्चीस शहरों में दुकानें हैं– ब्रांचें हैं। अब सेठ का आदेश उदयपुर की ब्रांच में आया कि 100 थान कपड़े के जोधपुर ब्रांच में भेज दो– उदयपुर का ब्रांच मैनेजर यदि स्वामी भक्त हुआ तो क्या करेगा वह ? तुरन्त रवाना ही करके उत्तर देगा न, कि जी, साहब भेज दिए। और दूसरी तरफ, यदि मैनेजर ने सोचा कि सेठ जी तो कुछ समझते ही नहीं, यह कपड़ा तो मेरे अत्यन्त प्रिय है– इसे न भेजू! बोलो, मांई–पहले वाला मैनेजर अच्छा या दूसरा ? दोनों में से किससे ज्यादा सेठ राजी रहेगा।

महात्माजी ने आगे व्याख्या की "ठीक इसी तरह हम सभी भगवान के ब्रांच मैनेजर ही तो है न" ? तो आपकी बहन को परमात्मा ने बेटा सौंपा अब दूसरी जगह उसकी जरूरत पड़ गई – सो भगवान ने ट्रांसफर कर दिया।

ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय।

इतने दयालु है परमात्मा कि हमें सर्व श्रेष्ठ मनुष्य योनि दी, प्रतिभा, बुद्धि एवं अवसर सभी दिये। सन्तवाणी का श्रवण भी करने को मौका दिया। अच्छी लगती है न ये पंक्तियाँ –

''मुख में हो रामनाम, राम सेवा हाथ मे।
तूं अकेला नाहीं प्यारे, राम तेरे साथ में।।''

यह मनड़ा कहीं न कहीं तो लगेगा ही ? तो क्यों न इसे प्रभु स्मरण में लगावें एवं अपने को मालिक न समझकर मैनेजर समझे, और यथा साध्य "परहितरत् रहते हुए भगवद् सेवा के भाव से" सभी कार्य करते रहें–दुःखी–गरीब, भाई–बहिनों के साथ विशेष प्रेम और सरलता का बर्ताव करें। "मानव सेवा ही माधव सेवा है" – सावधानी ही साधना है, नर ही नारायण है– इसका रखें सतत् ध्यान।

नारायण सेवा संस्थान का सेवा कार्य अद्भूत

– उमाशंकर गुप्ता उच्च शिक्षा मंत्री म.प्र.

संस्थान के बारे में काफी कुछ सुना था, मध्यप्रदेश में लगने वाले शिविरों में किए जाने वाले कार्यो को देखा था किन्तु आज उदयपुर में संस्थान के अवलोकन पश्चात इस नये संसार के बारे में अद्भुत अनुभव एवं आत्मिक सुख का अनुभव हुआ है। यह बात मध्यप्रदेश के उच्च शिक्षा एवं तकनीकी मंत्री श्री उमाशंकर गुप्ता ने संस्थान अवलोकन के दौरान कही। आरम्भ में अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि श्री गुप्ता द्वारा संस्थान के सेक्टर–4 स्थित पोलियो हॉस्पीटल में सेवा ले रहे रोगियों से कुशलक्षेम पूछी और शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने का आशीर्वचन देते हुए कहा कि संस्थान द्वारा निःशक्तजन एवं निराश्रितों के लिए जो परोपकारी कार्य किए जा रहे वह महान है। संस्थान अवलोकन से पूर्व श्री गुप्ता ने दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का शुभारम्भ किया। संस्थान निदेशक ट्रस्टी श्री देवेन्द्र चौबीसा ने संस्थान के 30 वर्षीय निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ साधक श्री दिनेश वैष्णव, श्री फतहलाल, श्री सुरेश राव आदि भी उपस्थित थे।

सांस ही गलत लेते हैं तो सब गलत हो जाता है

योग की छह शाखाएं हैं। जिसे आज आमतौर पर योग समझा जाता है, वह वास्तव में हठ योग है। योग का यही सबसे लोकप्रिय रू‍प है। की तीन शाखाएं हैं। योगासन, प्राणायाम यानी ब्रीदिंग और मेडिटेशन। सेहत के लिए तीनों का अपना महत्व है। यह कोई नई चीज नहीं है। यह हजारों वर्षों से है। इसलिए यह कहना उचित नहीं होगा कि मैंने कोई नई खोज की है। मैंने इसे ज्यादा व्यावहारिक बनाया। इससे ऐसे नतीजे मिले, जिनकी पुष्टि की जा सकती है। हमारे पास नई विधियों की प्रभावशीलता के प्रमाण हैं। मैंने प्राणायाम के लिए लगने वाले समय के वक्त के मुताबिक ढालने जैसे कई बदलाव किए। इससे फायदा हुआ। सेहत के लिए ब्रीदिंग एक्सरसाइज बहुत फायदेमंद है, क्योंकि यदि हम सही ढंग से सांस नहीं ले रहे हैं तो सेहत के लिए बड़ी समस्या खड़ी हो सकती है। सांस के जरिये ही कोशिकाओं को ऑक्सिजन मिलती है और शरीर में बनने–टूटने की क्रियाएं तेज होती है। आप जल्दी–जल्दी सांस लेते हैं या पर्याप्त गहराई से नहीं लेते तो खून में अम्लीयता बढ़ सकती है और फिर मस्तिष्क व मांस–पेशियों को पर्याप्त रक्त मिलने में बाधा आ सकती है।

अब यह कैसे जाने क आप सही ढंग से सांस ले रहे हैं या नहीं ? यदि सांस लेते समय आपका सीना ऊपर उठता तो मतलब है कि आप गहराई से सांस नहीं ले रहे हैं। यदि गर्दन व कंधों की मांस–पेशियों में कड़ापन है या दर्द होता है तो यह भी गहरी सांस के अभाव का संकेत है। बार–बार उबासी लेने का मतलब है कि आपको पर्याप्त ऑक्सिजन नहीं मिल रही है। विश्राम के समय सांस की रफ्तार 10 से 12 सांस प्रति मिनट होती है। यदि 12 से ज्यादा हो तो सांस ठीक से नहीं ले रहे हैं।

सही ढंग से सांस लेने के लिए प्राणायाम सर्वश्रेष्ठ तरीका है। रीढ़ को सीधे रखकर मुंह बंद कर नाक से गहरी सांस लें। 1–2 मिनट से शुरू कर इसे पांच मिनट तक बढ़ाया जा सकता है। प्राणायाम के कई प्रकार हैं। अनुलोम–विलोक एक प्रकार है, जो काफी सरल होने के साथ शरीर का पर्याप्त ऑक्सीजन सप्लाई की दृष्टि से उपयोगी है। इसमें दाएं नथुने से सांस लेकर बाएं से छोड़े और फिर उसी नथुने सांस लेकर दाएं नथुने से छोड़ें। इसे भी कुछ मिनटों से शुरू कर 5 मिनट तक बढ़ाया जा सकता है।

प्राणायाम : कछुए की सांस लेने और छोड़ने की गति इन्सानों से कहीं अधिक दीर्घ है। व्हेल मछली की उम्र का राज भी यही है। बड़ औश्र पीपल के वृक्ष की आयु का राज भी यही है। वायु को योग में प्राण कहते हैं। इसलिए प्राणायाम को अपने नियमित जीवन का हिस्सा बनाएं।

लोककथा

रसायनी विद्या

एक बार मगध के राजा चित्रांगद वन विहार के लिए निकले। सुंदर सरोवर के किनारे एक महात्मा की कुटिया दिखाई दी। राजा ने सोचा, महात्मा अभावग्रस्त होंगे। उन्होंने उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ धन भिजवा दिया। महात्मा ने धनराशि लौटा दी। और अधिक धन भेजा गया, परन्तु सब लौटा दिया। तब राजा स्वयं गए और पूछा, 'आपने हमारी भेंट स्वीकार क्यों नहीं की ?' महात्मा हंसते हुए बोले, 'मेरी अपनी आवश्यकता के लिए मेरे पास पर्याप्त धन है।' राजा ने कुटिया में इधर–उधर देखा। केवल एक तूंबा, एक आसन एवं ओढ़ने का एक वस्त्र था। राजा ने फिर कहा, 'मुझे तो कुछ दिखाई नहीं देता।' महात्मा ने राजा को पास बुलाकर उनके कान में कहा, 'मैं रसायनी विद्या जानता हूं, किसी भी धातु से सोना बना सकता हूं।' अब राजा बेचैन हो गए, नींद उड़ गई। धन–दौलत के आकांक्षी राजा ने किसी तरह रात काटी और महात्मा के पास अगले दिन सुबह–सुबह ही पहुंचकर बोले, 'मुझे वह विद्या सिखा दीजिए, ताकि मैं राज्य का कल्याण कर सकूं।' महात्मा ने कहा, 'ठीक है, पर इसके लिए तुम्हें वर्षभर प्रतिदिन मेरे पास आना होगा। मैं जो कहूं उसे ध्यान से सुनना होगा।' राजा प्रतिदिन आने लगे। आश्रम के माहौल और महात्मा के सत्संग का उन पर गहरा असर पड़ने लगा। एक वर्ष में उनकी सोच बदल चुकी थी। महात्मा ने पूछा, वह विद्या सीखोगे ?' राजा ने कहा, 'अब तो मैं स्वयं रसायन बन गया। अब किसी नश्वर विद्या को सीखकर क्या करूंगा।'

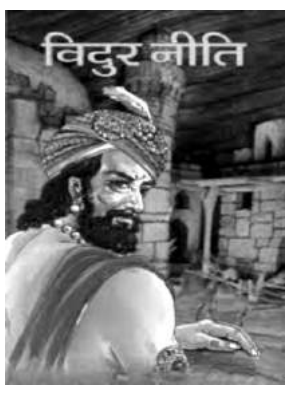

विदुर नीति की 9 खास बातें

जब मनुष्य शुभ वाणी, अच्छे कर्म और व्यवहार करते हुए कई अवसरों पर अपयश या निंदा का पात्र बनता है, तो ऐसी स्थिति उसके मनोबल पर बुरा असर ही नहीं डालती, बल्कि अनेक अवसरों पर यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या सही है और क्या गलत है ?

ऐसी मानसिक दशा उसे भलाई और अच्छाई से भी दूरी ले जा सकती है। शास्त्रों के मुताबिक ऐसी स्थिति के लिए मनुष्य की एक छोटी–सी भूल भी कारण होती है। वह है–सही समय की समझ। अगर शब्द, व्यवहार और कर्म के लिये सही समय और विचार में तालमेल नहीं हो तो अच्छी बातें या अच्छे कर्म भी बेकार हो जाते हैं।

समय, सोच व कर्म में सही तालमेल बनाने के लिये ही विदुर नीति में 9 खास बातों का जिक्र किया गया है।

विदुर नीति में कहा गया है कि –जो मनुष्य इन 9 बातों को अपनाता है वह हर जगह मान–सम्मान व प्रशंसा का पात्र बन जाता है –

- जो आवेश या जल्दबाजी के साथ धर्म, अर्थ या कर्म की शुरुआत नहीं करता है।
- जो पूछने पर व्यवहारिक व सत्य बात बताता है।
- जो मित्र की भलाई के लिये झगड़ा पसंद नहीं करता ।
- जो मान–सम्मान नहीं मिलने पर भी क्रोधित या कुंठित नहीं होता है।
- जो हमेशा सही और गलत की पहचान अर्थात् विवेक बनाए रखता है।
- जो दूसरों में दुर्गुण, दोष या कमी को नहीं देखें।
- जो दयालु भाव बनाए रखता है।
- जो दुर्बल व्यक्तियों का विरोध नहीं करता और दूसरों की शक्तियों के बल पर कोई काम नहीं करता और न ही ऐसे लोगों का समर्थन करता है।
- जो बढ़–चढ़कर बातें न करें और विवाद को सहन कर लें।

यंत्र पूजा से आती है लक्ष्मी

यंत्र कई प्रकार के होते हैं जिनमें भूपृष्ठ, मेरूपृष्ठ, पाताल, मेरूप्रस्तर, कूर्मपृष्ठ आदि मुख्य है। यंत्रों में रेखा, बीज, अंक, मंत्रों आदि का प्रयोग होता है। अष्ठगंध, पंचगंध की स्याही बना कर या केसर, हल्दी, सिंदूर आदि का प्रयोग कर यंत्र लेखन किया जाता है। भोजपत्र, तांबा, चांदी, सोने आदि के पत्र पर यह निर्मित होता है। अनार, चमेली, नीम, आम, आक की टहनी, पक्षियों के पंख आदि से लिखा जाता है। शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित यंत्र मनोकामना पूर्ति में सहायक होने के साथ ही आपकी जिंदगी बदलने में समर्थ होता है। कुछ उपयोगी यंत्र निम्न है।

श्री यंत्र : श्री यंत्र आध शार्क का प्रतीक है। इसे यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस यंत्र की अधिष्ठात्री देवी मां त्रिपुर सुंदरी है। रविपुष्य, गुरूपुष्य नक्षत्र या अन्य शुभ मुहूर्त में रजत, ताम्र, स्वर्ण या भोजपत्र पर इस यंत्र का निर्माण करें। तत्पश्चात् यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा कर मां त्रिपुर सुंदरी का ध्यान एवं कमल कट्टे या रूद्राक्ष की माला को निम्न मंत्र का जाप करें। दीपावली, शरद या चैत्र नवरात्रा, पंचमी, सप्तमी, अष्ठमी की रात्रि को इस यंत्र की साधना विशेष फलदायी मानी जाती है। इस यंत्र की पूजा–अर्चना से दुख–दरिद्रता दूर होकर घर में चिरस्थाई लक्ष्मी का वास होता है। व्यापार, नौकरी मे मनोनुकूल फल प्राप्ति होती है। जीवन की सुख समृद्धि की कामना के साथ ही आपकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है।

मुद्रक–न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमला देवी, मुद्रण स्थल–13,भोपा मगरी, बीएसएनएल एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3, उदयपुर (राज.) प्रकाशन स्थल–ई–डी–71 बापा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.) सम्पादक–लक्ष्मी लाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 मो.–09928022275,09785039524 www.mannkijeet.com Email:- mankijeet2015@gmail.com